International Journal of Academic Research
ISSN: 2348-7666; Vol.10, Issue-3, July-September, 2023
Impact Factor: 6.023; email: drtvramana@yahoo.co.in

"वृद्ध चिंतन के परिप्रेक्ष्य में ऋषिकुमार शर्मा पंडित की कहानी 'ठूँठ' वृद्धों के प्रति बढती उपेक्षा व अनादर की दास्तान

डी.रघुराम प्रसाद,
हिन्दी प्राध्यापक,
सरकारी स्नातक महाविद्यालय, तिरुवूरु

लेखक परिचय:

ऋषिकुमार शर्मा पंडित का जन्म 12 जुलाई 1956 को बुलंद शहर जिले के गेसूपुर गाँव में हुआ | आपने बि.यस.सि और ग्रंथालय विज्ञान में डिग्री हासिल की | आप जाने-माने रचयिता और अभिनेता हैं | कहानी, वार्ता, सामयिक लेख व समीक्षा-लेखन में, मंच पर व दूरदर्शन में नट-प्रदर्शन में विख्यात हैं | 1983 से आकाशवाणी मथुरा, वृन्दावन के कार्यक्रमों में भाग लेते आ रहे हैं | बीस साल तक उत्तर प्रदेश राज्य के प्रसिद्ध रंगमंच 'स्वस्तिक' के सचिव रहे | उसके द्वारा प्रदर्शित कई नाटकों में तथा दूरदर्शन के कई धारावाहिकों में अपना नट-कौशल दिखाया | फिलहाल हज़रतपुर फिरोज़ाबाद (उ.प्र.) के केन्द्रीय विद्यालय में पुस्तकालयाध्यक्ष के रूप में कार्यरत हैं |

ठूँठ-कथावस्तु : वृद्ध शर्मा जी अपने जीवन की अंतिम दशा बेटा शेखर के यहाँ गुज़ारते रहते हैं | घर में उनका बेटा शेखर, बहू शीला और पोता राहुल रहते हैं | जैसा कि कहावत है-'मूल से ब्याज प्यारा होता है; उसको सच साबित करते हुए वे अपने पोते राहुल को बहुत चाहते हैं | इसलिए बदस्तूर उसे अपने घर के बगलवाले प्लाट में मौजूद ठूँठ के यहाँ, जिसे वे अपना दोस्त मानते हैं, ले चलते हैं| उस ठूँठ को अपनी बाहों में भरकर व्यायाम करने लगते हैं | व्यायाम से लौटते वक्त राहुल को दाऊजी हलवाई की दुकान ले जाकर कचौडी खिलाना नहीं भूलते हैं |

ठूँठ को गले लगाते शर्मा जी को राहुल टकटकी बाँधकर देखता है | उनकी यह हरकत नन्हे राहुल की समझ में बिलकुल नहीं आती है | वह कुतूहल से इसका कारण जानना चाहता है और उनसे पूछता है- "बाबा– आप इसे रोज़ अपनी बाहों में क्यों लेते हो?", तो शर्मा जी उससे कहते हैं-'यह ठूँठ मेरा दोस्त है |' उनके इस उत्तर से चकित राहुल उनसे फिर पूछता है- 'बाबा! यह पेड़ आपका सब से अच्छा दोस्त कैसे हो सकता है?

पोते के इस सवाल के बदले शर्मा जी राहुल से सवाल करते हैं-"अच्छा राहुल यह बताओ– "तुम दोस्त किसे कहते हो?"

"वही जो समय पे काम आए –तपाक से राहुल कहता है"

"बिल्कुल ठीक कहा राहुल– देखना मेरा दोस्त यह ठूँठ भी हमेशा मेरा साथ देगा।"

"राहुल बेटा– यह ठूँठ सिर्फ़ ठूँठ ही नहीं, अपितु मेरा दोस्त है। हमने बरसों इसके साथ गुज़ारे हैं। इसकी तरुणाई एवं इसके यौवन का मैं साक्षी रहा हूँ। यह

हमेशा से ठूँठ नहीं था। इसकी ठंडी छाँव में बैठकर तेरी दादी, तेरे पापा तथा मैं ने, भीषण गर्मियों में इसका भरपूर आनंद उठाया है[3] |" शर्माजी की ये बातें नन्हे राहुल की समझ के बाहर होती हैं| आखिर वह मन ही मन सोचता है –'बाबा सठिया गए|'

राहुल को लेकर देर से घर पहुंचे शर्मा जी से शीला कारण पूछती है; तो वे उससे कहते हैं- बेटी राहुल ने कचौड़ी के लिए जिद किया | तब वह अपनी फटी जबान से शर्मा जी से कह देती है-"तुम्हें इस उम्र में भी अपनी जबान के स्वाद पर काबू नहीं और नाम ले रहे हो, मासूम राहुल का |" शर्मा जी उसकी बातों से मन मसोसकर रह जाते हैं | एक दिन राहुल शर्मा जी को ठूँठ के पास ले जाता है; जहाँ पर कुछ लोग उसके ऊपर चढ़कर उसकी नाप-तोल लेते दिखाई देते हैं | कपूर साहब के बेटे को वहाँ पाकर शर्मा जी उसे अपने घर ले जाते हैं और बहू शीला से दो कप अदरक की चाय लाने को कहते है| मगर वह उनकी इज्ज़त का बिलकुल ख्याल नहीं करती हुई कह देती है- "आपको तो पंचायत बैठाने का शौक लग गया है | अब आपके हर ऐरे गैरे के खातिर के लिये पैसे कहाँ से आएँ।[7]" बहू की बेअदबी से शर्मा जी विष का घूँट पीकर रह जाते हैं| कपूर साहब के बेटे से बातचीत जारी रखते हैं| तब उनको पता चलता है- वह ठूँठवाला प्लाट उसने खरीद लिया

और वहाँ से ठूँठ को हटाकर अपने लिए एक कोठी बनाना चाहता है| यह सुनकर शर्मा जी अपने दिल का मलाल निकालते हुए उससे कहते है- "तुम ठीक कहते हो बेटा, ठूँठ तो हमेशा बाधा ही होता है, जब यह फलदार,

हवादार था तो दुनिया ने भी उसका भरपूर आनंद लिया, आज अगर यह ठूँठ न होता तो क्या तुम इसे काटने की हिम्मत कर सकते थे–बरखुरदार–सीधे हवालात जाते" शर्मा जी की बात पर कपूर साहब का बेटा बौखला जाता है | वह अपनी करतूत की हिमायत में कहता है –'यह ठूँठ है, तभी तो मैं इसे कटवाता हूँ | उसके जवाब से ठूँठ का कटना निश्चित जानकर शर्मा जी उससे वचन लेते हैं कि 'यह ठूँठ जैसे ही कटेगा, उसकी लकड़ियाँ वह उन्हीं को दे देगा|' कपूर साहब के बेटे से वचन लेने के बाद उन्हें लगता है- दुनिया-भर का ऐश्वर्य मिल गया|

एकदिन शर्मा जी अपने घर बैठकर अख़बार पढ़ते हैं | राहुल उनके आसपास गेंद से खेलता रहता है | अचानक गेंद शर्मा जी को जा लगती है| इस पर वे झूठ-मूठ का गुस्सा दिखाते हुए राहुल से मुर्गा बनने को

कहते है. और वह उनसे माफ़ी माँगता है और उनके पास आकर बैठ जाता है और उनसे ठूँठ का अर्थ पूछता है | इतने में चाय का प्याला लेकर वहाँ आई शीला राहुल से कहती है-अरे! ठूँठ का अर्थ बाबा क्या समझाएँगे, मैं समझाती हूँ | ठूँठ का अर्थ है- "काम का ना काज का दुश्मन अनाज का।"

अपनी बहू शीला की यह जली-कटी शर्मा जी के दिल को तीव्र चोट पहुँचाती है और असह्य पीड़ा से वे तत्काल परलोक सिधर जाते हैं | शर्मा जी के अंतिम संस्कार सपन्न करने की चिंता में डूबे शेखर से कपूर साहब का बेटा आ मिलता है | उसे अपना परिचय देता है शर्मा को दिए गए अपने वचन की बात कहकर उनकी चिता अपने प्लाट में कटे ठूँठ की लकड़ियों से सजाने व जलाने की याचना करता है| शेखर अपने पिता शर्मा जी की अंतिम इच्छा पूरी कर देता है | उनकी चिता ठूँठ की लकड़ियों से सजाई व जलाई जाती है

इस तरह अंत समय में भी ठूँठ अपने दोस्त शर्मा का साथ नहीं छोडता हैं और उनकी देह को सम्मानपूर्वक बिदा करके अपना कर्तव्य निभाता हैं |

चरित्र चित्रण: वृद्ध शर्मा जी, उनका नन्हा पोता राहुल और ठूँठ इस कहानी के मुख्य पात्र हैं | शर्मा जी का बेटा शेखर, बहू शीला और कपूर साहब का बेटा राहुल प्रासंगिक पात्र हैं | शर्मा जी वृद्धों का प्रतिनिधि है जो जीवन के अंतिम पड़ाव में अपनों की उपेक्षा और निरादर का शिकार है| वे अपनी हालत की तुलना एक ठूँठ
से करते हैं | अपने घर के पासवाले प्लाट में मौजूद एक ठूँठ को अपना दोस्त मान लेते हैं | सुबह व्यायाम के दौरान रोज उसके यहाँ जाते हैं | उससे गले मिलते हैं और आत्मीयता का अनुभव करते हैं| जब उनका नन्हा पोता राहुल कुतूहल से उनसे पूछता है-'आदमी और ठूँठ के बीच दोस्ती कैसे हो सकता है? वे उसे समझाते हुए कहते हैं-"राहुल बेटा– हमने बरसों इसके साथ गुज़ारे हैं। इसकी तरुणाई एवं इसके यौवन का मैं साक्षी रहा हूँ। यह हमेशा से ठूँठ नहीं था। इसकी ठंडी छाँव में बैठकर तेरी दादी, तेरे पापा तथा मैंने, भीषण गर्मियों में इसका भरपूर आनंद उठाया है |" हालाँकि शर्मा जी की इन गंभीर बातों को नन्हा राहुल तो नहीं समझ पाता है है मगर ठूँठ बनने से पहले पेड़ का जो महत्त्व है, उस पर प्रकाश पड़ता है| इसीप्रकार जब कपूर साहब का बेटा ठूँठवाले प्लाट में अपने लिए एक कोठी बनाना चाहता है, जिसमें बाधक ठूँठ को कटवाना चाहता है, तब शर्मा जी उससे कहते है- ".. तुम ठीक कहते हो बेटा ठूँठ तो हमेशा बाधा ही होता है, जब यह फलदार, हवादार था, तब दुनिया ने भी उसका भरपूर आनंद लिया, आज अगर यह ठूँठ न होता तो क्या तुम इसे काटने की हिम्मत कर सकते थे–बरखुरदार–सीधे हवालात जाते |" शर्मा जी की इन बातों से 'जिस थाली में खाया, उसी में छेद करनेवाले लोगों के प्रति शर्मा जी का आक्रोश और अपना हमजोला ठूँठ के प्रति उनकी सहानुभूति प्रकट होती है | आखिर ठूँठ का कटना निश्चित जानकर, उसकी लकड़ियाँ खुद को देने का वचन कपूर साहब के बेटे से लेना अपने जैसों के प्रति शर्मा जी के अटूट लगाव और उनकी दूरदर्शिता का परिचय देता है|

ठूँठ का अर्थ है-"काम का ना काज का, दुश्मन अनाज का।" कहकर अपने बेकारी का मजाक उड़ाती शीला जली-कटी से वृद्ध शर्मा जी के आत्माभिमान को ठेस पहुँचता है और वे तीव्र हृदयाघात से परलोक सिधर जाते हैं | जैसे 'अंधे को लाठी का सहारा वैसे शर्मा जी को ठूँठ का आसरा' अपने अंतिम संस्कार भी शर्माजी सब से अच्छा दोस्त ठूँठ को शामिल करते हैं | उसकी लकड़ियों से सजी चिता पर परलोक सिधार जाते हैं | नन्हा राहुल, जो शर्मा जी का पोता है; ठूँठ कहानी का और एक मुख्य पात्र है | उसे व्यायाम से ज्यादा दाऊ जी हलवाई की दुकान जाना और कचौड़ी खाना पसंद है | इसीलिए व्यायाम के बहाने शर्मा जी के साथ बिला नागा ठूँठ के पास जाता है और ठूँठ को गले लगाते शर्मा जी से उसका कारण पूछता है | जब शर्मा जी अपने और अपनों की खुशहाली में उस ठूँठ (जो किसी समय ठूँठ न था) का महत्त्व उसे समझाना चाहते हैं और उसे अपना सब से अच्छा दोस्त बताते है, तब नन्हा राहुल उनकी बात बिलकुल नहीं समझ पाता है | मगर उपेक्षित वृद्धों के प्रति पाठकों के मन में सहानुभूति जगाने, लेखक का जो प्रयास है वह स्पष्ट हो जाता है | राहुल के ये दो प्रश्न 'ठूँठ का अर्थ क्या है"? और बाबा! ठूँठ आपके सब से अच्छा दोस्त कैसे हो सकता है? सारी कहानी को गति, वृद्ध शर्मा जी की इति और कहानी को चरमोत्कर्ष की स्थिति प्रदान करते हैं और नन्हे राहुल की महत्ता स्थापित करते हैं |

'ठूँठ' इस कहानी का शीर्षक है, जो शर्मा जी जैसे वृद्धों का प्रतिनिधि भी है| यह शेखर और शीला जैसे स्वार्थी सगे संबंधियो से कई गुना बेहतर है | वह शर्मा जी का अभिन्न साथी है | ठूँठ बनने से पहले शर्मा जी के परिवारवालों को अपनी ठंडी छाँह से सांत्वना देता है

और बाद में निर्जीव ठूँठ बनकर भी वृद्ध शर्मा जी की ज़िंदगी का आसरा बनता है | जीते जी उनके प्रेम का भाजन और मौत के बाद भी उनकी चिता का जलावन बनकर, जलकर उत्तम दोस्ती का मिसाल कायम करता है| आखिर घनिष्ट मित्र ठूँठ और शर्मा जी अपने पाँव आप कुल्हाड़ी मारनेवाली लोक-रीति से जीते वक्त अपना अस्तित्व व महत्त्व तो खो देते हैं मगर एक-दूसरे का साथ देना कभी नहीं छोड़ते हैं | इस प्रकार कहानी का शीर्षक के रूप में एवं वृद्धों का हमजोली व हमदर्द के रूप में 'ठूँठ' अत्यंत सार्थक है |

'ठूँठ' कहानी में शेखर प्रासंगिक पात्र है जो शर्मा जी का ना लायक बेटा है | वह जोरू का गुलाम है | उसकी पत्नी शीला जब शर्मा जी से बदसलूकी करती है और उन्हें जली-कटी सुनाती है; तब उसके कानों में जूँ नहीं रेंगती| शीला स्वार्थी नयी पीढ़ी का प्रतीक है | वह शर्मा जी की मुहफट बहू है; जो शर्मा जी को मौके-बे मौके जली-कटी सुनाती रहती है | वह न तो अपने ससुर शर्मा जी की बात का यकीन नहीं करती है और न ही उनकी उम्र का लिहाज़ करती है | हरदम जली-कटी बातों से उनकी नाक में दम कर देती है | नन्हे राहुल को ठूँठ का अर्थ समझाने के बहाने, वह शर्मा जी की ज़िंदगी की निरर्थकता की खिल्ली उड़ाती है और उन्हें मौत के घाट उतारती है| कपूर साहब का बेटा ठूँठ कहानी का और एक प्रासंगिक पात्र है जो ठूँठ वाला प्लाट खरीदता है | निरर्थक और अपनी कोठी के निर्माण में बाधक ठूँठ को कटवाते वक्त, शर्मा के बुलाने पर उनका घर जाता है और शीला की बदसलूकी झेलता है और ठूँठ के महत्त्व के संबंध में शर्मा जी की लंबी-चौड़ी टीका-टिपण्णी सुनता है उनकी आपत्ति का सामना करता है | ठूँठ को कटवाने का अपना निर्णय तो वापस नहीं लेता है परन्तु कटे ठूँठ की लकड़ियाँ उन्हीं को देने का वादा करके शर्मा को ईश्वरीय आनंद प्रदान करता है | वह शर्मा जी को दिए अपने वचन पर खरे उतारता है और शर्मा जी की मौत के बाद चिंता में इबे

उत्तर क्रियाओं से मुँह-मोडे उनके बेटे शेखर को कर्तव्य की याद दिलाता है और शर्मा की अंतिम इच्छा की पूर्ति के लिए उनकी चिता को ठूँठ के कटे जलावनों से सजाने व जलाने की याचना करता है और भौतिक रूप से अलग हुए दो अच्छे मित्रों (ठूँठ और शर्मा जी) को फिर से मिलाता है |

कथोपकथन : शक्तिशाली कथोपकथन ठूँठ कहानी में प्राण फूँकते हैं | ये कहानी को गति प्रदान करते हैं | एक ठूँठ को गले लगाते शर्मा जी से उनका पोता कारण पूछता है; तो वे उसे अपना सब से अच्छा दोस्त बताते हैं | उनकी बात पर राहुल कौतूहल से पूछता है-'बाबा! यह पेड़ आपका सब से अच्छा दोस्त कैसे हो सकता है?

पोते के इस सवाल के बदले शर्मा जी राहुल से सवाल करते हैं-"अच्छा राहुल यह बताओ– "तुम दोस्त किसे कहते हो?"

"वही जो समय पे काम आए –तपाक से राहुल कहता है"

"बिल्कुल ठीक कहा राहुल– देखना मेरा दोस्त यह ठूँठ भी हमेशा मेरा साथ देगा।[5]"

फिर अपनी बात को विस्तार से समझाते हुए शर्मा जी कहते हैं-"राहुल बेटा– यह ठूँठ सिर्फ़ ठूँठ ही नहीं, अपितु मेरा दोस्त है। हमने बरसों इसके साथ गुज़ारे हैं। इसकी तरुणाई एवं इसके यौवन का मैं साक्षी रहा हूँ। यह हमेशा से ठूँठ नहीं था। इसकी ठंडी छाँव में बैठकर तेरी दादी, तेरे पापा तथा मैंने, भीषण गर्मियों में इसका भरपूर आनंद उठाया है|

इस प्रकार राहुल और शर्माजी के कथोपकथन से ठूँठ के अतीत पर और छायादार पेड़ के रूप में उसके सार्थक

जीवन पर प्रकाश पड़ता हैं| साथ ही साथ अपनों के लिए अपना तन-मन-धन होम करके, अपने जीवन की

अंतिम वेला में अपनों के आश्रय में निर्रथक और महत्त्वहीन जीवन बितानेवाले शर्मा जी जैसे वृद्धों के प्रति सहानुभूति जगती है | अपने पिता समान शर्मा जी के प्रति शीला के कटु वचन जैसे "तुम्हें इस उम्र में भी अपनी जबान के स्वाद पर काबू नहीं और नाम ले रहे हो, मासूम राहुल का" (कचौड़ी गटक जाने का आरोप)

"आपको तो पंचायत बैठाने का शौक लग गया है | अब आपके हर ऐरे गैरे के खातिर के लिये पैसे कहाँ से आएँ। (कपूर साहब के बेटे के लिए अदरक की चाय बनाकर लाने को कहने पर शीला की प्रति कथन)

ठूँठ का अर्थ है- "काम का ना काज का दुश्मन अनाज का[10]।" (नन्हे राहुल के प्रश्न का उत्तर देते हुए शीला का क्रूर मजाक) से शीला का कुसंस्कार और वृद्धों के प्रति उसकी तिरस्कार भावना प्रकट होती है| इस प्रकार लेखक ने कथोपकथन के सफल प्रयोग से वृद्धों के प्रीति (शर्मा जी) सहानुभूति, और स्वार्थ के अंधों के प्रति (शीला और शेखर) क्रोध की भावना जगाने में सफल हुआ |

आखिर वृद्ध चिंतन की कहानी 'ठूँठ' जाने-माने अंग्रेज कवि लार्ड अल्फ्रेड टेनिसन की कविता 'दि ओक की याद दिलाती है " Live thy Life/ Young and old/Like Yon oak/
Bright in spring/Living gold;/Summer-rich/Then, and then/Autumn-changed/Soberer-hued/
Gold again/ All his leaves/Fall'n at length,/Look he stands/Trunk and bough/Naked strength.
और पाठकों के ह्रदय में अपनी अमिट छाप छोड़ जाती है|